A·B·M·College, Golmuri JSR

2nd year INTER

Hindi core 'B'

Ch=01 पद्य खण्ड

पाठ का नाम ⇒ राम - लक्ष्मण - परशुराम संवाद

कवि ⇒ तुलसीदास

Q1. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन - कौन से तर्क दिए ?

Ans राम - परशुराम - लक्ष्मण संवाद का यह अंश रामचरितमानस के बाल कांड से लिया गया है। सीता स्वयंवर में राम ने शिव का धनुष भंग कर दिया। मुनि परशुराम को जब यह समाचार मिला तो वे क्रोधित होकर वहाँ आते हैं। शिव धनुष को खंडित देखकर वे अत्यंत क्रोधित हो जाते हैं।

परशुराम के क्रोधित होने पर लक्ष्मण ने कहा कि बचपन में हमने बहुत-सी धनुहियाँ तोड़ डाली हैं परन्तु आप कभी भी इतने क्रोधित नहीं हुए। इस धनुष में ऐसी कौन सी बात है जो आपकी इस पर इतनी ममता है? लक्ष्मण की इस बात पर परशुराम के क्रोध को और भी बढ़ा दिया। उनके क्रोधित होने का मुख्य कारण यह था कि उन्हें लगा कि धनुष तोड़ने वाले ने उनके आराध्य

शिव का अपमान किया है। और उसे दण्ड देना आवश्यक है।

Q. परशुराम ने अपने विषय में सभा में क्या-क्या कहा, निम्न पद्यांश के आधार पर लिखिए —

बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही।
भुजबल भूमि भूप बिनु कीही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीही।
सहसबाहु भुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा।।
मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर।
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर।।

Ans. परशुराम क्रोधपूर्ण गंभीर वाणी में बोले - हे विश्वामित्र! सुनो, यह बालक बड़ा कुबुद्धि और कुटिल है, काल के वश होकर यह अपने कुल का घातक बन रहा है। यह सूर्यवंश रूपी पूर्णचन्द्र का कलंक है। परशुराम की बातों से उनके अत्यंत क्रोधी स्वभाव का पता चलता है। वे केवल मुनि ही नहीं बल्कि योद्धा भी थे। वे क्रोधी स्वभाव वाले बाल ब्रह्मचारी थे। वे क्षत्रियों के प्रबल विरोधी थे।

परशुराम ने अपने विषय में सभा में कहा कि मैं बाल ब्रह्मचारी और अत्यंत क्रोधी हूँ। मैंने अपनी भुजाओं के बल से धरती को राजाओं से रहित

कर दिया और बहुत बार उसे काटने को दे दिया। परशुराम ने क्रमा में लक्ष्मण से कहा कि सहस्त्रबाहु की भुजाओं को काटने वाले मेरे फरसा को देखो। तुम अपने माता-पिता को शोक के वश अर्थात् चिंतामग्न मत करो। मेरा फरसा बहुत ही भयानक है, यह गर्भ के बच्चों का भी नाश करने वाला है।

Q. पाठ के आधार पर तुलसी के भाषा-सौंदर्य पर दस पंक्तियाँ लिखिए।

Ans भाव पक्ष :- तुलसीदास रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। उनका भाव क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। उनके काव्य का सर्वाधिक प्रभावशाली पक्ष है, लोकमंगल की आकांक्षा। उनके काव्य में धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि की व्यापकता है। उन्होंने सगुण-निर्गुण, ज्ञान-भक्ति, शैव-वैष्णव आदि में समन्वय स्थापित करने का सराहनीय प्रयास किया। उनके काव्य में हृदय की विशालता, भावाभिव्यक्ति की शक्ति एवं लोकहित का सहज मिलन है। यही कारण है कि तुलसी का भाव-पक्ष अत्यंत प्रबल है।

तुलसीदास ने अवधी एवं ब्रज दोनों ही भाषाओं में काव्य-रचना की है। उनके काव्य प्रबंध एवं मुक्तक दोनों प्रकार के हैं। उनके काव्य में चौपाई, दोहा, सोरठा, हरिगीतिका, कवित्त, पद आदि अनेक छंदों का प्रयोग हुआ है।

Scanned with CamScanner

दोहा ⇒ दोहा एक लोकप्रिय मात्रिक छंद है जिसकी पहली और तीसरी पंक्ति में 13-13 मात्राएँ होती हैं। दूसरी और चौथी पंक्ति में 11 - 11 मात्राएँ।

चौपाई ⇒ मात्रिक छंद चौपाई चार पंक्तियों का होता है और इसकी प्रत्येक पंक्ति में 16 मात्राएँ होती हैं।

तुलसीदास से पहले सूफी कवियों ने भी अवधी भाषा में दोहा-चौपाई छंद का प्रयोग किया है जिसमें तुलसीदास का काव्य दो अलंकारों से पूरी तरह सजा-धजा है।

दोनों स्वयं करें

9. परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुई उनके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।

Scanned with CamScanner